International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
February 2026 14(2SCE)
समकालीन कला, साहित्य, संगीत एवं नृत्य का विज्ञान एवं समाज विज्ञान से अंतर्संबंध
www.granthaalayah.com

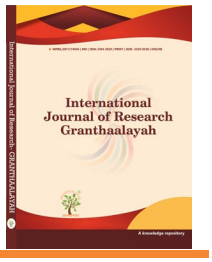

Original Article

SOCIAL CONSCIOUSNESS IN ART AND LITERATURE

कला और साहित्य में सामाजिक चेतना

Dr. Bhagwat Singh Rai [1*]
[1] Assistant Professor (Sociology), Prime Minister's College of Excellence, Shri Atal Bihari Vajpayee Government Arts and Commerce College, Indore, India

ABSTRACT

English: Art and literature are important aspects of human life as well as social life. With the development of civilization, humans first developed art for their expression and then, with intellectual development, also created literature. Thus, art and literature are the mediums responsible for human expression, which express a person's creative imagination and flights of mind and emotions. While art expresses beauty and ideas through visual display or music, literature creates stories, poems and dramas through words, which often influence each other and inspire human experience and civilization culture.

Hindi: कला और साहित्य मानवीय जीवन के साथ सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। सभ्यता के विकास के साथ ही मानव ने अपनी अभिव्यक्तियों हेतु पहले कला का विकास किया फिर बौद्धिक विकास के साथ साहित्य का सृजन भी किया इस प्रकार कला और साहित्य मानवीय अभिव्यक्ति के प्रभारी माध्यम है जो व्यक्ति की रचनात्मक कल्पना और मन की उड़ानों भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं जहां कला दृश्य प्रदर्शन या संगीत के माध्यम से सौंदर्य और विचारों को व्यक्त करती है वहीं साहित्य शब्दों के माध्यम से कहानियां कविताएं और नाटक रचता है जो अक्सर एक दूसरे को प्रभावित करते हुए मानवीये अनुभव और सभ्यता संस्कृति को प्रदर्शित प्रेरित करते हैं।

Keywords: Social Consciousness, Art and Literature, Creative Expression, Cultural Reflection, Human Civilization, सामाजिक चेतना, कला और साहित्य, क्रिएटिव अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक सोच, मानव सभ्यता

प्रस्तावना

कला और साहित्य मानवीय जीवन के साथ सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। सभ्यता के विकास के साथ ही मानव ने अपनी अभिव्यक्तियों हेतु पहले कला का विकास किया फिर बौद्धिक विकास के साथ साहित्य का सृजन भी किया इस प्रकार कला और साहित्य मानवीय अभिव्यक्ति के प्रभारी माध्यम है जो व्यक्ति की रचनात्मक कल्पना और मन की उड़ानों भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं जहां कला दृश्य प्रदर्शन या संगीत के माध्यम से सौंदर्य और विचारों को व्यक्त करती है वहीं साहित्य शब्दों के माध्यम से कहानियां कविताएं और नाटक रचता है जो अक्सर एक दूसरे को प्रभावित करते हुए मानवीये अनुभव और सभ्यता संस्कृति को प्रदर्शित प्रेरित करते हैं।

*Corresponding Author:
Email address: Dr. Bhagwat Singh Rai (bhagwat.rai2013@gmail.com)
Received: 25 December 2025; **Accepted:** 27 January 2026; **Published** 28 February 2026
DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6774
Page Number: 231-234
Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah
Online ISSN: 2350-0530, **Print ISSN:** 2394-3629
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

कला

कला मन की अभिव्यक्ति की रचनात्मकता और तकनीकी कौशल का उपयोग करके भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का व्यापक माध्यम है उदाहरण के लिए चित्रकलाए मूर्ति कला एनृत्य कलाए संगीत कलाए वास्तु कलाए शिल्प कला और फिल्म ।

साहित्य

यह रचनात्मक लेखन का संग्रह है जिसमे भाषा को एक कला के रूप में उपयोग किया जाता है और यह कहानीए कविताए उपन्यासए नाटक एलघु कथाओं के रूप में हो सकता है।

कला और साहित्य का संबंध

कला और साहित्य दोनों का लक्ष्य मानवीय अनुभव सुंदरता सुख.दुख और खुशी को व्यक्त करना और समाज को समझना है। साहित्य दृश्य कलाओं को प्रेरित करता है जैसे चित्रों का वर्णन करना और कला साहित्य के लिए दृश्य रूप प्रदान करती है जैसे पुस्तकों के लिए चित्रण ।कलाऔर साहित्य समाज का दर्पण होते हैं वह किसी भी समाज की मान्यताओं इतिहास सभ्यता संस्कृति और विचारों को दर्शाते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी पहुंचते हैं। कला और साहित्य समाज को प्रेरणा भी देते हैं और चिंतन को प्रेरित कर समाज को जागरुक करते हैं।

भारतीय सामाजिक संदर्भ में देखें तो भारत में रामायणए महाभारत जैसे महाकाव्य वेदए पुराण एउपनिषद और अजंता एलोरा जैसी कलाकृतियां कला और साहित्य के गहरे संबंध को व्यक्त करती हैं रविंद्र नाथ टैगोर जैसे महान व्यक्तित्व कवि एलेखक और चित्रकार दोनों थे जो इस जुड़ाव को दर्शाते हैं। इस प्रकार कला और साहित्य मानव समाज और चेतना के अभिन्न अंग है जो मिलकर हमें खुद को और दुनिया को बेहतर ढंग से समझने में सहायता करते हैं।

सामाजिक चेतना की अवधारणा

सामाजिक चेतना का अर्थ है समाज के प्रति जागरूकता और समाज की समस्याओं असमानता और अधिकारों के प्रति संवेदनशीलता यह मानसिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति और समाज अपनी स्थिति के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं और उनके समाधान की आवश्यकता को समझने में सक्षम होते हैं।

कला और साहित्य में सामाजिक चेतना के मुख्य बिंदु

कला और साहित्य सामाजिक चेतना के प्रमुख संवाहक हैं जो समाज में जागरूकता समानता और परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं वे सामाजिक यथार्थ अन्यायएकुरीतियोंए बुराइयों और समस्याओं को उजागर कर पाठकों और दर्शकों को प्रेरित करते हैं साहित्य पंचतंत्र से लेकर आधुनिक लेखकों तक और कला प्राचीन काल से लेकर पारंपरिक आधुनिक चित्रकला के विकास तक मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक बदलावों और समाज के नवनिर्माण को व्यक्त करते हैं।

समाज सुधार और जागरूकता

साहित्य के माध्यम से जातिवादए पर्दा प्रथाए सती प्रथा एदहेज प्रथा बाल विवाहए अशिक्षा जैसी समस्याओं को उजागर कर समाज में सुधार और समाज को जागरूक करने का कार्य किया जाता है।

ऐतिहासिक राजनीतिक प्रतिरोध

भारत में कला ने उपनिवेशवाद के खिलाफ और स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान प्रतिरोध की भूमिका निभाई है।

यथार्थवादी चित्रण

साहित्यकार प्रेमचंद एयशपाल एनिराला पंत और मन्नू भंडारी जैसे लेखकों ने समाज की गहरी समस्याओं और सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है।

सांस्कृतिक पहचान

पारंपरिक कला मधुबनी वर्ली के चित्र सामाजिक सांस्कृतिक संरचना और धार्मिक विषयों को प्रदर्शित करती है।

सामाजिक न्याय

कला और साहित्य सामाजिक आर्थिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाते हैं और समाज के कमजोर वर्गों को सशक्त बनाते हैं इस प्रकार कला और साहित्य केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं बल्कि सामाजिक विकास मानवीय मूल्यो की सुरक्षा और नैतिक चेतना को जगाने का एक सशक्त माध्यम है।

कला से सामाजिक चेतना

कला से अध्यात्म धर्म और सौंदर्य दृष्टि पैदा होती है कला से समाज का मानस ऊंचा होता है ।व्यक्ति साहित्य को पढ़े न पढ़ें किंतु कला समाज के देश काल को प्रदर्शित करती है। कला समाजए संस्कृति सभ्यता के विकास की सूचक है ।इटालियन दार्शनिक कोरची का कहना है कि कला विज्ञान और अध्यात्म से भी अधिक आवश्यक है क्योंकि यह मानव को परिष्कृत करती है समाज में प्रतिकूल परिस्थितियों को कलाकार अपने भावए स्वरए शब्दए रूपए चित्र के माध्यम से व्यक्त कर समाज में परिवर्तन भी लाता है। राजा रवि वर्मा के चित्र तत्कालीन समाज की चेतना से उदित हुए। बंगाल के चित्रकार चित्र प्रसाद के चित्र रेखांकन प्राणनाथ ए अविंद्रनाथ के चित्र सभी सामाजिक चेतना को जागृत करने वाले हैं कला के माध्यम सेकभी संघर्ष किया जाता है तो कभी मुक्ति पाई जाती है कला यश प्राप्तिएधन प्राप्ति एशांति तथा समाज को सही राह दिखाने का माध्यम बनती है। हिंदी के प्रसिद्ध कवि बाबू गुलाब राय ने जीवन में कला की महत्त्व को दर्शाते हुए लिखा है कि कला का उदय जीवन से होता है कला हमारे व्यक्तित्व का परिष्कार करती है।

कला अपने सामाजिक परिवेश से भी प्रभावित होती है आदिम समाज के शिकार करते हुए चित्रए सिंधु घाटी की सभ्यताए मेसोपोटामिया की सभ्यता में तत्कालीन समाज की झलक दिखाई देती है उदाहरण पशुपति की मोहर का चित्र उस समय की धार्मिक मान्यता को दर्शाती है। इसी प्रकार गुफा चित्रों एवं पाषाण चित्रों से पांचवी एवं छठी शताब्दी के समाज की झलक दृष्टिगत होती है मुगल काल से आधुनिक काल तक चित्रकला में अनेक परिवर्तन हुए आधुनिक काल में भी कला समाजिक चेतना को प्रदर्शित करती हैं। रविंद्र नाथ टैगोर ने 1921 में शांतिनिकेतन कला विद्यालय स्थापित किया जिसमें विद्यार्थियों प्राकृतिक वातावरण में रहकर कला का विकास कर सके। कला समाज की यथार्थ का बोध कराती है। कला के माध्यम से ही ग्रामीण नगरीय एजनजाति समाज का चित्रण प्रस्तुत होता है।कलाकार जिस सामाजिक द्वंद से गुजरता है उसे अपने आप से अलग नहीं रख सकता उदाहरण के लिए फ्रांस के चित्रकार मार्शल देवता 1967 68 में एक पोस्ट कार्ड पर मोनालिसा का चित्र पर मूंछ बनाकर रेनेशा काल की सौंदर्य मान्यता का विरोध प्रकट किया था।

भारत विभाजन के दर्दनाक परिवेश ने कुछ कलाकारों के मन को गहरे स्तर तक प्रभावित किया सतीश गुजराल प्राण्णनाथ मांगू आदि कलाकारों की कृतियों में विभाजन की विभीषिका से स्पष्ट दिखाई देती है। इसी प्रकार बंगाल के भीषण अकाल का चित्रण उस समय के कलाकारों ने किया ।चित्र प्रसाद की रेखांकन पूरे अकाल का चित्रण करते हैं । अविंद्र नाथ द्वारा भारत माता की बनाई गई तस्वीर आजादी का संघर्ष कर रहे युवाओंएक्रांतिकारीए स्वतंत्रता के दीवानों के लिए प्रेरणा स्रोत का काम किया ।संपूर्ण भारत को एकता सूत्र में बांधने का कार्य भारत माता मंदिर की तस्वीर से हुआ इस तस्वीर ने पूरे भारत को पूरब से पश्चिम उत्तर से दक्षिण तक एक सूत्र में बांधने का काम किया साथ ही भारत में राष्ट्रभक्ति के साथ राष्ट्रीयता की लहर का प्रचार प्रसार भी किया। वर्तमान में कार्टूनिस्ट भी कार्टून के माध्यम से समाज और राजनीति अर्थव्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों को उजागर करते हैं। वर्तमान समय में आज भी नुक्कड़ नाटक के माध्यम से या नाट्य मंचन से समाज माध्यम से समाज को जागरूक किया जाता है इसी प्रकार भारत के लोक नृत्य एलोक संगीतए लोक कलाएं समाज को गतिमान रख सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करने में सहायक होती हैं। पशु के जीवन में भी कोई कल नहीं रहती है इसलिए उसमें कोई चेतन भी नहीं होती ।

साहित्य से सामाजिक चेतना

भारतीय साहित्य में सामाजिक चेतना का एक लंबाई इतिहास रहा है प्राचीन काल में साहित्यकारों ने अपने साहित्य में सामाजिक समस्या और चुनौतीयो को व्यक्त किया है उदाहरण के लिए महाभारत में जातिवाद एयुद्ध और हिंसा जैसे हम मुद्दों को चित्रित किया है हमारे महत्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रंथ वेदए पुराणए उपनिषद भी समाज को नई दिशा देते हैं इसी क्रम में भक्ति आंदोलन के समय कबीरए तुलसीए गुरु नानक के साहित्य ने भारतीय समाज को चैतन्य कर एक नई दिशा प्रदान की।आधुनिक भारतीय साहित्य ने भी अपने साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त विभिन्न चुनौतियां समस्याओं के खिलाफ आवाज उठाई है उदाहरण के लिए रविंद्र नाथ टैगोर की कहानियों में जातिवादए भेदभाव और गरीबी जैसे मुद्दों को चित्रित किया गया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी रचनाओं में स्वतंत्रता आंदोलन की दयनीय स्थिति से की दशा से द्रवित होकर उसे समय का मार्मिक चित्रण किया है। ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियांए आक्रोशए भूख और अभाव से त्रस्त जीवन ने उनके साहित्य को बहुत प्रभावित किया ।उनके प्रसिद्ध नाटक भारत दुर्दशा में उसे समय की कुंठाए तनाव ए अमानवीयता का चित्रण मिलता है। राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी ने उसे समय की परिस्थितियों से प्रेरित होकर समाज को प्रेरित करने का कार्य अपनी रचनाओं से किया है।उनकी कविता पुष्प की अभिलाषा भयभीत समाज में प्राण फूंकती है। प्रेमचंद के साहित्य में उस समय की सामाजिक पीड़ाए मनोदशाए उस समय की सामाजिक दुर्दशा एवं जर्जर अर्थव्यवस्था का चित्रण किया है। प्रेमचंद के उपन्यासों में किसानोंए महिलाओं और पिछड़ों की समस्याओं का चित्रण सामाजिक बदलाव का आधार बना। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने भी अपनी रचनाओं में सामाजिक चेतना को उजागर किया है उन्होंने अपने कथा साहित्य में समाज के कमजोर वर्गोंए दलित एमहिलाओं और अन्य पिछड़े वर्ग की समस्याओं को उठाया है। निराला ने अपने साहित्य में समाज के रूढ़िवादी दृष्टिकोण और पाखंड पर तीखा प्रहार किया है। इसी प्रकार प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई एवं शरद जोशी ने भी अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से उसे समय की व्याप्त बुराइयों का यथार्थ चित्रण कर सामाजिक चेतना को नई दिशा प्रदान की है। इसी प्रकार यशपाल भीष्म साहनी और मन्नू भंडारी जैसे साहित्यकारों ने समाज के मुद्दों को प्राथमिकता दी है।

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है की कला और साहित्य ने समाज का यथार्थ का चित्रण कर विसंगतियों को उजागर कर मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूकता लाने का सशक्त कार्य किया है। कला और साहित्य का सृजन समाज के चेतन मन को झकझोरकर लोगों में विश्वास और जागृति पैदा करता है यह समाज का दर्पण होने के साथ.साथ समाज का मार्गदर्शक भी है

कला और साहित्य मानवीय जीवन के साथ सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। सभ्यता के विकास के साथ ही मानव ने अपनी अभिव्यक्तियों हेतु पहले कला का विकास किया फिर बौद्धिक विकास के साथ साहित्य का सृजन भी किया इस प्रकार कला और साहित्य मानवीय अभिव्यक्ति के प्रभारी माध्यम है जो व्यक्ति की रचनात्मक कल्पना और मन की उड़ानों भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं जहां कला दृश्य प्रदर्शन या संगीत के माध्यम से सौंदर्य और विचारों को व्यक्त करती है वहीं साहित्य शब्दों के माध्यम से कहानियां कविताएं और नाटक रचता है जो अक्सर एक दूसरे को प्रभावित करते हुए मानवीये अनुभव और सभ्यता संस्कृति को प्रदर्शित प्रेरित करते हैं।

REFERENCES

www.iiirms.org
www.wikipedia.
quora.com
https://jayantijournal.com
https://jetir.org
https://core.com
https://sodhganga
Verma, V. (1980). Hindi Literary Encyclopedia (हिंदी साहित्य कोश). Lok Bharati Prakashan.
Bhandari, M. (1979). Mahabhoj (महाभोज). Rajkamal Prakashan.
Renu, P. N. (1974). Maila Anchal (मैला आंचल). Rajkamal Prakashan.